Dr. Madan Paswan, History

Class: B.A. Part-I (Hons.P-I+Sub.).

Topic: Unit-IVth (i) Chandragupta-II.

Lecture no. 07.

Date: 07.08.2020

from pg. no. 1 to 2.

चन्द्रगुप्त द्वितीय (380-415 ई०):

रामगुप्त को पदच्युत कर समुद्रगुप्त के योग्य पुत्र चन्द्रगुप्त-II शासक बना। उसका दूसरा नाम देवराज या देवगुप्त थे, जैसा कि वाकाटक अभिलेखों व चन्द्रगुप्त-II को कुछ सिक्कों से जिन पर 'देवश्री' लिखा है स्पष्ट है। उसकी मुद्राओं में उसे देवश्री, विक्रम, विक्रमादित्य, सिंहविक्रम, सिंहचन्द्र, परम भागवत एवं अजित विक्रम इत्यादि कहा गया है। कुछ विद्वान यह भी विश्वास करते हैं कि लोक कथाओं के माध्यम से उज्जयिनी का प्रसिद्ध 'चन्द्रगुप्त

चंद्रगुप्त-II के विवाह संबंध

चन्द्रगुप्त-II अपने विवाह सम्बन्धों के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं :-

1. उसने नागवंश की कुबेरनागा के साथ स्वयं विवाह किया था।
2. अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन-II के साथ किया।
3. अपने पुत्र कुमारगुप्त-I का विवाह कदम्ब वंश में किया था।

विक्रमादित्य' पड़ी था। यद्यपि इसे ठीक प्रकार से प्रमाणित नहीं किया जा सका है। चन्द्रगुप्त में अपने पिता की भांति ही सैनिक प्रतिभा थी और उसने अपने पिता का किये गये कार्य को आगे बढ़ाया। चन्द्रगुप्त ने समुद्रगुप्त से प्राप्त साम्राज्य को विस्तृत किया। उसकी सबसे महान सफलता शकों के विरुद्ध थी। इस विजय के उपरान्त ही उसने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी। भारत के उत्तर-पश्चिम में कुषाण और गुजरात काठियावाड़ के प्रदेश में शकों का राज था। चन्द्रगुप्त ने भारत से इन विदेशियों के आधिपत्य को समाप्त कर दिया 409 ई० के लगभग उसने शक राजा रुद्रसिंह-III को परास्त करके उसके राज्य को अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया, जिसके कारण पश्चिम के समुद्र-तट और पश्चिम के देशों से व्यापार करने वाले केन्द्र स्थानों पर उसका अधिकार हो गया। शक विजय के कारण चन्द्रगुप्त-II को 'शकारि' भी कहा जाता है। दिल्ली (मेहरौली) में कुतुबमीनार के निकट एक लौह स्तम्भ है जिस पर 'चन्द्र' नामक राजा की प्रशस्ति खुदी हुई है। यदि उस 'चन्द्र' राजा को चन्द्रगुप्त द्वितीय मान लिया जाय, जैसा कि अनेक इतिहासकार मानते हैं, तो यह मानना पड़ेगा कि चन्द्रगुप्त ने अनेक युद्ध किये और पश्चिम में बल्ख (बैक्ट्रिया) से लेकर पूर्व में बंगाल और उसके निकट के क्षेत्रों को जीतकर अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया।

यह विश्वास किया जा सकता है कि उसके विवाह सम्बन्धों का उद्देश्य राजनीतिक था। इन विवाह सम्बन्धों ने उसे शकों को परास्त करने में सहायता दी। उसने स्वयं अपना विवाह नागवंशीय राजकुमारी कुबेरनागा के साथ किया तथा उससे उत्पन्न पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक शासक रुद्रसेन-II से कर दिया। रुद्रसेन की मृत्यु के बाद चन्द्रगुप्त ने अप्रत्यक्ष रूप से वाकाटक राज्य को अपने राज्य में मिलाकर उज्जैन को अपनी दूसरी राजधानी बनायी। शकों को पराजित

करने की स्मृति में चन्द्रगुप्त-II ने चांदी के विशेष सिक्के जारी किये। विक्रमादित्य के दरबार में 9 विद्वान रहते थे, जिन्हें नवरत्न कहा जाता है। उसके शासनकाल में चीनी यात्री फाह्यान भारत आया, जिसने भारत का यात्रा-वृतांत लिखा है। वह वैष्णव धर्मावलम्बी था, जैसा कि गढ़वा अभिलेख जिसमें चन्द्रगुप्त-द्वितीय को परम भागवत कहा गया है, से स्पष्ट है।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नवरत्न :-

(1.) कालिदास,	(6.) बेताल भट्ट,
(2.) धन्वन्तरि,	(7.) घटकर्पर,
(3.) क्षपणक,	(8.) वराहमिहिर, तथा
(4.) अमरसिंह,	(9.) वररुचि।
(5.) शंकु,	

चन्द्रगुप्त-II के विभागीय सदस्यों के नाम :-

(1.) वीरसेन शाव - चन्द्रगुप्त-II का सन्धिविग्रहिक।
(2.) शिखर स्वामी - चन्द्रगुप्त-II का मंत्री एवं कुमारामात्य।
(3.) आम्रकार्दव - चन्द्रगुप्त-II का सेनापति।

(Continue .....)

Date : 07.08.2020